“उम्मीद है आपको इन कहानियों से पर्याप्त प्रेरणा मिले”

Real Life Motivational Stories PDF

Real Life Success Stories PDF

** सुब्रतराय सहारा **

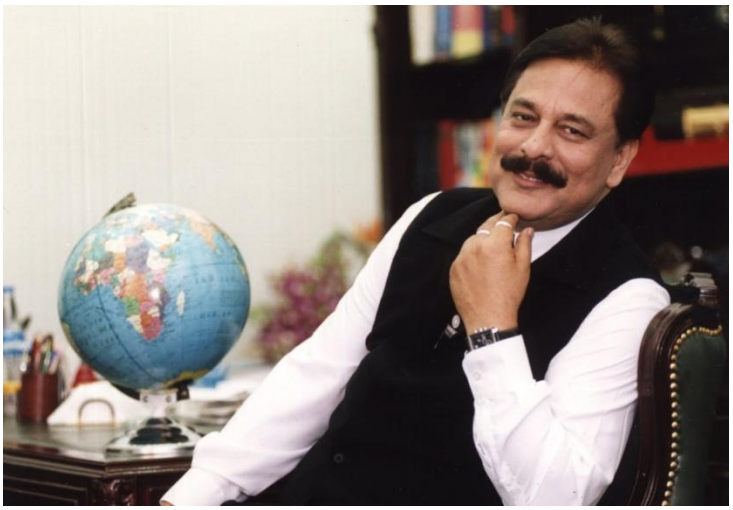

“करोडों का साम्राज्य खडा करने का सपना”

सुब्रतराय सहारा/Subratray Sahara पेशे से इंजीनियर हैं । उनका जन्म 10 जून 1948 में बिहार के छोटे से कस्बे अररिया फोर्ट में हुआ था। जब उनके पिता की आकस्मिक मृत्यु हुई तब उन्होंने गोरखपुर को अपनी कर्मभूमि बनाया। और दो हजार रूपयों से फायनेंस कपंनी खोल दी।

उस समय उनके पास एक छोटा सा स्कुटर था। और छोटे से दफ्तर में तीन लोग काम करते थे।

जिनसे वे कहते थे ***"सुरक्षा का दामन कभी मत थामो, हमेशा सुरक्षा को दांव पर लगाकर ही काम / सीमाएं तोडने के लिए होती है। जो आदमी सुरक्षा के घेरे में रहकर काम करता है वह हमेशा विफल होता है।*** इसलिए भेडों वाली जिंदगी मत जियों, शेर वाली जिंदगी जियों । "

1978 में सहारा पेराबैंकिंग की स्थापना की । तब शुरू में सिर्फ 42 जमाकर्ता थे लेकिन आज 3.5 करोड से अधिक जमाकर्ता है। काम करने की उनकी सबसे बडी खुबी अपने साथ के सभी व्यक्तियों का सम्मान देना है। उनकी संस्था में न कोई मालिक हैं न कोई कर्मचारी । सभी डायरेक्टर्स, पार्टनर, प्रामोटर्स, वर्कर और शेयर वर्ग के है।

बडी सफलता पाने के लिए सुब्रतराय ने 1994 में जब खंडाला से थेडी दूर पर स्थित आबीमवली गांव को शहर में बदलने का प्लान बनाया तब लोग उन पर हंसे थे।

कुछ लोगों का कहना था की इस योजना में वह पैसा बर्बाद कर रहे है, क्योंकि भारत में इस तरह का आधुनिक और मंहगा शहर सफल नही होगा ? उन्हें अपनी योजना पर विश्वाश था। इसलिए एंबेवेली का काम शुरू हुआ।

आज एंबेवेली एक बेहतरनी शहर के रूप में जानी जाती है। दस हजार एकड से ज्यादा में फैले इस शहर में सिर्फ नौ फीसदी जमीन पर ही होटल और अन्य सुविधाएं खडी की गई है । बाकि 91 फीसदी जमीन पर पैड, तालाब और झील, फव्वारे और अन्य सुविधाएं उपलब्ध करवाई गई है। इस शहर में लगभग 800 परिवार रह रहे है।

उस प्रोजेक्ट से सुब्रतराय ने खुब पैसा कमाया। जिसका फायदा कंपनी से जुडे सब लोगो को हुआ। दो हजार से बीस हजार करोड का व्यापरीक साम्राज्य स्थापित करने वाले सुब्रतराय सहारा का नारा है- "वी विन" यानी हम जीतेंगे।

** रजनीकांत **

“जिद से बने साउथ फिल्मों के सुपर स्टार”

रजनीकांत उर्फ "शिवजी गणेशन" का जन्म 22 सितबंर 1949 को महाराष्ट्र के एक गरीब मराठी परिवार में हुआ था। तब वे तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड और हिन्दी में से कोई भी भाषा नही बोल पाते थे। यह सभी भाषाऐ उन्होंने बाद में सीखी है।

पांच साल की उम्र में रजनीकांत ने अपनी मां को खो दिया, फिर घर के हालातो ने उन्हें कूली से लेकर कंडक्टर तक की नौकरी करने को मजबुर किया। ***अब रजनीकांत का फलसफा हैं कोई भी काम करो उस पर अपनी छाप छोडों चाहे वह काम बसं कंडक्टरी का ही क्यों न हो।?***

वे बस कंडक्टर के रूप में भी खासे लोकप्रिय हुए थे, कईं यात्री इस इंतजार मे रहते थे की वे उसी बस मे जायेंगे जिसमें रजनीकांत हो क्योंकि रजनीकांत का टिकट फाडने और पैसे गिनने और यात्रीयों से बात करने का अंदाज बिलकुल ही निराला था।

इसी स्टाईल की वजह से उन्हं कन्नड नाटकों के निर्देशक कुलप्पा ने धार्मिक नाटक में दुर्योधन का रोल दे दिया। जो उनके लिए मील का पत्थर साबित हुआ। फिर एक दोस्त ने उन्हें अपने खर्चे से उन्हें मद्रास फिल्म इस्टीट्युट भेजा और दो साल तक उनके दो साल का प्रक्षिक्षण का खर्च उठाया। लौटने पर उन्हें एक फिल्म का छोंटा सा रोल मिला वह भी 'क्रुर पति' का।

इसलिए रजनीकांत कहते है- ***असंभव कुछ भी नही है, आप जिस फिल्ड में हों अपने काम को प्रोफेशनल अंदाज में करो। व्यक्तिगत बातों को अपने व्यवसाय में हावी मत होने दो फिर आपकी गरिमा बड जायेंगी।***

रजनीकांत ने साउथ की फिल्मों में बिना किसी “God Farther” के Super Star का मुकाम हासिल किया। जो उनकी मेहनत और पैशन को दर्शाता है। अब वे एक महान कलाकार कहलाते है। इस बात से पता चलता हैं कि यदि आपका निश्चय द्रड हो तो साधन-हिनता भी रूकावट नही बनती।

इसलिए **रजनीकांत** का मानना हैं ***उचें सपने देखो, उंचा करने की सोचों, और कर्म पर विश्वाश करो तब सफलता निश्चित ही मिलती है। परन्तु जल्दी ऊंचा बनने के चक्कर में गलत रास्तों तथा शॉर्टकट को कभी मत अपनाओं। बल्कि विश्वाश और द्दढ संकल्प के साथ आगे बडो*** |

.

.

.

.

.

** मधुर भंडारकर **

“खुद के दम पर बने फिल्म निर्देशक”

मधुर भंडारकर का जन्म 26 अगस्त 1928 को मुबंई में हुआ था। उनके पिता इलेक्ट्रिक काॅन्ट्रेक्टर थे और मां ग्रहीणी थी । अब मधुर विवाहित हैं, और एक बेटी के पिता भी । उनका विवाह 15 दिसंबर 2003 को रेणु से हुआ था। फिर पिता का बिजनेस ठप्प होने पर आर्थिक स्थिति इतनी खस्ता हो गई कि मधुर को पढाई छोडकर काम करना पडा।

तब मधुर ने ट्राफिक सिग्नल पर चिंगम बेचे और विडियो पार्लर पर नौकरी के दौरान बार गर्ल्स से लेकर फिल्म स्टार तक विडियों फिल्में पहूंचाने वाले 'डिलेवरी बॉय' का काम भी किया उसके बाद फिल्मों के सेट पर मेहनत मजदूरी की। इस बीच उन्हें देशी-विदेशी हजारों फिल्में देखने का मौका मिला और वही से फिल्म डायरेक्टर बनने की प्रेरणा प्राप्त हुई।

शुरू में वे अशोक गायकवार के सहायक रहे। अपने करिश्माई जीवन के कठिन सफर को याद करते हुए वह बताते हैं, ***मैं सेट-सेट भटकता रहता था, धीरे-धीरे कुछ लोगो से मेरा परिचय हो गया। जब मैं बताता था कि मैं छठी फेल हूं और डायरेक्टर बनना चाहता हूं तो लोग हंसते थे। लेकिन रामगोपाल वर्मा नही हंसे। उन्होंने मेरी बात को गंभीरता से सुना फिर फिल्म "रात" से अपना असिस्टेंट बना लिया।***

रंगीला तक पहूंचते-पहूचंते मधुर चिफ असिस्टेंट डायरेक्टर बन गये थे। उसके बाद पांच सालो तक फिल्म निर्माण और तकनीक की प्रेक्टिस नॉलेज ली। फिर त्री-शक्ति फिल्म से स्वतंत्र रूप से फिल्म निर्देशक बन गये। लेकिन फिल्म बुरी तरह असफल रही तब उन पर असफलता का लेबल लग गया।

उन दिनों मधुर बस में सफर करने के लिए मजबूर थे। फिर जब बस में उनकी मुलाकात फिल्म के जुनियर असिस्टेट से होती तो वे शर्म से गड जाते।

चारों ओर से तिरस्कार मिल रहा था लेकिन मधुर थका नही एक दिन चांदनी बार का आइडिया उनके दिमाग में आया और उसकी स्क्रिप्ट लिखी फिर वे तब्बू से मिले। तब्बू चांदनी बार की स्क्रिप्ट सुनने के बाद हीरोईन का रोल करने के लिए राजी हो गई। उस फिल्म ने चार नेशनल अवार्ड जीते और मधुर बॉलीवुड के सुपरहिट निर्देशक बन गये।

.

.

.

.

.

.

.

.

** शिव नादर **

“नोकरी से HCFL तक का सफर”

शिव नादर का जन्म 1945 में तमिलनाडु में हुआ था। युवा अवस्था में वे देहली क्लॉथ माइल्स डीसीएम में एक्जक्युटिव थे। और अच्छी खासी तनख्वाह पाते थे उनके जिम्मे केलकुलेटर डीवीजन था लेकिन दूसरे युवाओं की तरह उनके मन मे भी कुछ कर दिखाने का जज्बा था |

इसलिए नादर और उनके पांच सहयोगियों ने यह फैसला किया कि वे अपने दम पर कंप्युटर कंपनी स्थापित करेंगे। केलकुलेटर डिवीजन में काम करने की वजह से उनमें इतनी तकनीकि योग्यता थी कि उस काम को अच्छे ढंग से कर सकते थे।

उन्हीं दिनों एप्पल अपना पर्सनल कंप्युटर तैयार कर रहा था लेकिन जब शिव नादर ने डिसीएम की नौकरी छोडकर कंपनी शुरू करने का फैसला किया तो उनके दोस्त और सहयोगी भोंचक्के रह गये क्योंकि इस काम के लिए बीस लाख रुपयों की जरूरत थी जो कि उनके दोस्तो के पास नही थे ?

फिर शिव नादर अरूण मल्होत्रा, सुभाष अरोरा, योगेश वैद्य, डीसीएम पूरी और अजय चैधरी ने पूंजी इकट्ठी करने के लिए मिक्रोकॉम्प लिमी की स्थापना की । और केलकुलेटर तथा ऑफिस के सामान बेचें । उस काम से इतना पैसा आ गया की वे भारत में कंप्युटर बनाने का काम शुरू कर सके।

उसके बाद बीस लाख रुपये से 1976 में हिन्दूस्तान कंप्युटर लिमी का कारोबार शुरू हुआ। उन्हीं दिनों सरकार ने एक नयी नीति की घोषणा की थी जिसने पूरे कंप्युटर उद्योग का नक्षा ही बदल दिया।

क्योंकि सरकार ने कंप्युटर बाजार को अपने देश के लोगों के लिए खोल दिया था। और टेक्नोलोजी को इंपोर्ट करने की अनुमति दे दी थी। एचसी एल ने उस अवसर का लाभ उठाया और अपना पर्सनल कंप्युटर बाजार में उतार दिया। फिर दो साल के मे ही एचसीएल भारत की सबसे बडी आईटी कंपनियों में से एक बन गयी ।

तब शिव नादर ने कहा थ- ***आप उससे ज्यादा कर सकते हैं जितना कि आप कर सकने का भरोसा रखते हैं क्योंकि तकदीर होसलों से लिखी जाती हैं। इसलिए लिक तोडो, इतिहास बनाओ और दुनिया को बता दो कि मैं क्या हूं।***

.

.

.

.

.

Airtel Network...

** सुनील भारती मित्तल **

“हारी हुई बाजी को जीतने का जूनून”

सुनील भारती का जन्म 23 अक्टुबर 1957 को लुधियाना में एक स्थानीय नेता सतपाल मित्तल के घर हुआ। सुनील भारती को राजनीति से नफ्रत थी। इसलिए वे अपने पिता से बीस हजार रुपये लेकर अठारह साल की उम्र में व्यापार में उतर गये और उन पैसों से लुधियाना में साईकिल पार्ट्स बनाने का कारखाना खोल लिया।

उन्होंने कोल्ड एंड हॉट रोलिंग की छोटी स्टेनलेस स्टील की फैक्ट्री भी लगा ली। उनकी महत्वकांक्षाएं बडी थी, इसलिए वे 1978 में दिल्ली आ गये और डीजल जनरेटरों का आयात करने लगे। तब वे जापान की होण्डा मोटर तथा सुजुकि मोटर कंपनी से जनरेटर मंगवाते और कहते थे, ***"बीते दिनों के सफलता पाने के सिद्धात पुराने हो चुके है इसलिए मैं नये सिद्धांतो को अपनाता हूं ताकि अवसरों को सफलता में बदल सकू।"***

परिवर्तन का नियम कहता हैं कि ***"वक्त के साथ बदलते रहो नही तो वक्त तुम्हें बदल देगा ।"***

उसके बाद जल्द ही वे डीजल जनरेटरों के सबसे बडे आयातकर्ता बन गये। और सुजुकी ने उन्हें भारत में अपना एकमात्र वितरक बना लिया। फिर मित्तल ने आरके गुप्ता के साथ मिलकर एक

और बिजनेस खडा किया जिसका नाम युनाईटेड फार्म रखा गया। जिसमें दवाएं बनती थी। अब यह बिजनेस भारतीय हेल्थ केयर के नाम से पहचाना जाता है।

लेकिन सुनील भारतीय के सिर पर दुनिया को जीतने का जूनून सवार था। इसलिए उन्होंने पुश बटन टेलीफोन के पार्ट्स इंपोर्ट किये और एक नयी कपंनी बिटेल खोल दी। जब देश में मोबाईल सेवा शुरू हुई तब उन्होंने एयरटेल कंपनी बनायी। और देश को एक नयी दिशा दी।

"आज उनकी कंपनियों का टर्नओवर पचास हजार करोड है। और उनका नाम विश्व के उन अमीर लोगों में गिना जाता है जिन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था को नया मोड दिया ।"

अब उनका मानना हैं ***जब आप शांत, सकारात्मक और इमानदार बन जाते है तब दुसरे लोग आपका ज्यादा संम्मान करते हैं, क्योंकि तब वो समझ जाते हैं कि आपका खुद पर पूरा नियंत्रण है।***

“वह कौन सा फार्मूला है जो कंपनी को बाजार में कामयाब बनाता है ? यह सवाल आज बिजनेस की दुनिया में सबसे ज्यादा उठाया जाता है। कामयाबी का मंत्र हैं इनोवेशन यानी सर्विस और प्रोडक्ट में नया करना। यह मंत्र बाजार को केप्चर करने में काम आता है। कहावत हैं कि कामयाब वही जो सोचे नया। यानी जो नई चिजों को इजाद करेगा वही दुनिया पर राज करेगा।“

.

.

-

-

** ब्रजमोहन. मुंजाल **

“सडक पर दोडती हुई मोटर साईकलों की हीरों”

ब्रजमोहन मुंजाल का जन्म 7 अगस्त 1924 को अविभाजित पंजाब के लालपुर जिले की कामलीया तहसील में हुआ था। उनकी पढाई गांव के सरकारी स्कूल में हुई तब परिवार का सब्जी का कारोबार था लेकिन मुंजाल को यह रास नही आया। उनकी महत्वकांक्षा बडी थी सपने भी बडे थे। इसलिए उन्होंन साईकल के स्पेयर पार्ट्स का व्यवसाय शुरू किया |

फिर 1943 में वे लाहोर छोड कर अम्रतसर आ गये। उन दिनों साईकल के स्पेयर पार्ट्स भारत में आसानी से नही मिलते थे। तब उन्हें साईकल बनाने का लायसेंस लिया और लुधियाना में हीरो ब्राण्ड से अपनी साईकल बनाने लगें | बाजार में एटलस और रेले की साईकिलों का बोल-बाला था इसलिए मुंजाल विश्वस्तरीय पुर्जो और मशीनो की खोज में पहले जर्मनी गये, फिर जापान, ताकि साईकील बनाने की आधुनिक मशीने ला सके ?

इसके बावजूद मुंजाल अपनी उपलब्धि से खुश नही थे। वे कहते थे ***मेरा लक्ष्य विदेशी तकनीक को भारत लाने का हैं, ताकि मेरे देश के लोग विश्वस्तरीय साईकल का आनंद उठा सके ?*** फिर वे मोपेड बनाने लगे क्योंकि उन्होंने विदेश यात्रा के दौरान मोपेड सडकों पर चलती देखी थी, उसके बाद उन्होंने विदेशी पार्टनर की तलाष शुरू कर दी।

पहले पियाजी से संपर्क किया लेकिन जब कोलोब्रेशन में कामयाब नही हुए, तब उन्होंने जापान की सबसे बडी ऑटोमोबाइल्स कंपनी होण्डा से टायअप किया और हीरो होण्डा के नाम मोटर साईकल बनाने लगे। धीरे-धीरे हीरो होण्डा भारत सहित पूरी दुनिया में छा गयी। इससे उनका धंधा दिन दूना रात चोगुना बड गया।

"हाल में ही उन्होंने होण्डा से टायअप खत्म कर दिया और अपनी कंपनी नाम हीरो कार्पो रख दिया।"

अब उनकी हीरो मोटर साईकिल हीरो होण्डा पूरे विश्व में धूम मचा रही है। पिछले दिनों उन्होंने प्रेस कोन्फेरेंस में कहा था- ***"आपके चरित्र को ढालने में रोल मॉडल्स की अहम भूमिका होती है क्योंकि आप किसी व्यक्ति और उसके गुणों की जितनी ज्यादा कद्र करते है आप उसके जैसा बनने के उतने ही ज्यादा प्रयास करते है।"***

……

यह कहानिया "Power Of Positive Thinking" Book By Tarun Engineer से ली गयी है उसमें ऐसी ढेरों कहानियां है आप इसे जरूर ख़रीदे….

Thanks For Reading this, For More Visit Here- www.HindiMotivation.in